पाठ 24—अध्याय 25

इस सप्ताह हम उत्पत्ति 25 का अपना अध्ययन जारी रखेंगे। आइए उत्पत्ति 25:12—18 को पढ़कर शुरुआत करें।

उत्पत्ति 25:12—18 पढ़ें

हमने पिछले सप्ताह अब्राहम की रखैलों में से एक, केतुरा के वंशजों पर एक संक्षिप्त नज़र डालकर समाप्त किया। हाजिरा और कतूरा के अलावा अब्राहम की कितनी रखैलें थीं, यह हम नहीं जानते; संभवतः, अन्य लोग भी थे, केवल ये दोनों ही बाइबिल संबंधी कोई भूमिका निभा रहे थे। फिर भी, यह बिल्कुल भी ऐसी बात नहीं है जिसके बारे में हम आश्वस्त हो सकें।

आम तौर पर कहें तो, केतुरा के बेटों ने आदिवासी संघ बनाए और इश्माएल के साथ मिलकर विभिन्न अरब लोगों का निर्माण किया जिन्हें हम आज देखते हैं। मैं जनजातीय संघ कहता हूँ, क्योंकि इस्राएलियों के विपरीत, जो अपने व्यक्तिगत जनजातियों के साथ निकटता से जुड़े रहने की प्रवृत्ति रखते थे। रूबेन, शिमोन, एप्रैम, यहूदा, बिन्यामीन, और इसी तरह केतुरा के बेटे जल्दी से अपनी अलग—अलग जनजातियों के साथ पहचान कम हो गई और किसी भी शक्ति और प्रभाव को बनाए रखने के लिए उन्हें एकजुट होना पड़ा। वास्तव में, केतुरा के अधिकांश पुत्रों के नाम इतिहास में खो गए हैं, और हम वास्तव में उनकी प्रगति का बिल्कुल भी पता नहीं लगा सकते हैं। जिस पर बाइबिल का प्रभाव है, वह मिद्यान जनजाति है, जो अरब प्रायद्वीप के पश्चिमी छोर पर रहती थी, जिसकी सीमा रेखा अकाबा की खाड़ी थी। यह वही मिद्यान है जिसके मिस्र सैनिक को मारने के बाद मूसा मिस्र से भाग गया था; वही मिद्यान जहाँ उसे एक पत्नी मिली और वह 40 वर्षों तक चरवाहे के रूप में रहा।

पद 12—18 में हमें इश्माएल की पंक्ति पर एक रिपोर्ट मिलती है। इश्माएल अब्राहम और मिस्र की दासी, हाजिरा का बेदखल "पहलौठा" था। स्मरण करो कि जब इसहाक का जन्म हुआ तब इश्माएल एक किशोर था। यह भी याद रखें कि जब तक अब्राहम की एकमात्र व्यवस्था की पत्नी, सारा ने इसहाक को जन्म नहीं दिया, तब तक अब्राहम ने इश्माएल को अपना पहला पुत्र घोषित किया था। जहाँ तक अब्राहम का मानना था, इश्माएल प्रतिज्ञा का पुत्र था। उसका पुत्र जो उस वाचा को आगे बढ़ाएगा जो यहोवा ने अब्राहम के साथ बाँधी थी। यह कोई संयोग नहीं है कि इश्माएल की वंशावली (बनाम 11) पर इस खंड से ठीक पहले की पद यह कहती है" अब्राहम की मृत्यु के बाद, एक परमेश्वर ने उसके बेटे इसहाक को आशीष दिया।

यह एक अनुस्मारक था कि यहोवा ने इश्माएल को प्रतिज्ञा के पुत्र के रूप में अस्वीकार कर दिया था। प्रतिज्ञा का पुत्र वह था जिसे स्वयं ईश्वर ने चमत्कारिक तरीके से पैदा किया था। सारा के मृत गर्भ और अब्राहम के मृत बीज के माध्यम से प्रतिज्ञा का पुत्र इसहाक था।

आइए इश्माएल के बारे में थोड़ी समीक्षा करें और कुछ संदर्भ प्राप्त करें, क्योंकि हम इस पाठ में इस्लाम के बारे में भी बात करने जा रहे हैं। इससे पहले कि हम इश्माएल के इन बेटों पर नजर डालें। जो आधुनिक अरब लोगों का मूल हैं। मैं बताना चाहता हूँ कि इश्माएल एक सेमेटिक है, ठीक वैसे ही जैसे इसहाक था, और

निश्चित रूप से, अब्राहम की तरह था। सेमाइट क्या है? नूह के पुत्र शेम का वंशज। दरअसल, शब्द "सेमाइट" अपने आप में एक त्रुटि है। कम से कम इस अर्थ में कि इसका उच्चारण और वर्तनी कैसे की जाती है। वचन शेम–इट होना चाहिए, सेम–इट नहीं। त्रुटि एक विशिष्ट गैर–यहूदी ईसाई है, क्योंकि इब्रानी वर्णमाला वर्ण जिसे हम 7 के रूप में लिप्यंतरित करते हैं, का उपयोग दो तरीकों में से एक में किया जा सकता है: "चमक" के रूप में या "देखा" के रूप में। वर्ण के ऊपर स्थित छोटे बिंदु को उस इब्रानी वर्णमाला वर्ण के सबसे दाईं ओर ले जाने से यह एक शीन बन जाता है। जो हमें "श" ध्वनि देता है जैसे "वह" या "गोली मारो" या "शेरोन" ; छोटे बिंदु को सबसे बायीं ओर ले जाने से वही अक्षर "देखा" हो जाता है, जिससे हमें "स" ध्वनि मिलती है। उच्चारण जैसे "सैम" या "सिएटल" या "सीसाइड"। शेम शब्द की वर्तनी शीन से है, सीन से नहीं।

किसी भी स्थिति में, चूँकि इसहाक और इश्माएल के पिता एक ही थे, और वह शेम का वंशज था, तो वे दोनों बच्चे यहूदी हैं। वास्तव में, अब्राहम ने जिन बच्चों को जन्म दिया वे सभी यहूदी हैं। तो, अरब और यहूदी लोग आपस में बहुत जुड़े हुए हैं।वे सभी यहूदी हैं। यही कारण है कि आज हम जिस वचन को इतना सुनते हैं, वह है "यहूदी–विरोधी" इतना विरोधाभासी है। यहूदी विरोधी तकनीकी रूप से एक वचन है जिसका अर्थ है, सेमाइट्स के खिलाफ, शेम के वंशजों के खिलाफ। फिर भी, जिस तरह से उस वचन का हमेशा इस्तेमाल किया गया है, वह यहूदी लोगों के खिलाफ कट्टरता की घोषणा करना है और दिलचस्प बात यह है कि यह अरब लोग ही हैं जिन पर आमतौर पर यहूदी–विरोधी होने का सबसे अधिक आरोप लगाया जाता है। इसलिए, हमारे यहाँ अरब सेमाइट्स को सेमेटिक विरोधी कहा जा रहा है। उन नासमझ वाक्यांशों और वचनों में से एक जो नियमित रूप से उपयोग किया जाता है जिसमें किसी को भी पता नहीं चलता कि वे वास्तव में क्या कह रहे हैं।

मैं यह भी व्यक्त करना चाहता हूँ कि सिर्फ इसलिए कि इश्माएल को ईश्वर ने प्रतिज्ञा के पुत्र के रूप में अस्वीकार कर दिया था, इसका मतलब यह नहीं है कि इश्माएल किसी तरह से ईश्वर द्वारा शापित था। इश्माएल को दंडित या दंडित नहीं किया गया; वह प्रतिज्ञा का पुत्र नहीं हो सकता था क्योंकि यहोवा ने निर्धारित किया था कि दूसरा, इसहाक, वह पुत्र होगा। वास्तव में, इश्माएल को उसके पहले जन्म के दर्जे से बेदखल किए जाने की भरपाई करने के लिए, जो इसहाक के जन्म तक उसके पास था, इश्माएल को इसहाक के समान ही लगभग समान शारीरिक विरासत दी गई थी। यह सिर्फ इतना है कि जहाँ अब्राहम इसहाक को धन और समृद्धि प्रदान करेगा, वहीं यहोवा इश्माएल को प्रदान करेगा। इसलिए हमारे युग में, जबकि अरब लोग आम तौर पर इस्राएल के दुश्मन हैं, वे किसी भी तरह से इस कमरे में मौजूद हम से अधिक शापित लोग नहीं हैं, सिर्फ इसलिए कि हमारे राष्ट्र के नेता हाल ही में इस्राएल के खिलाफ आए हैं और उन्हें अपनी भूमि को विभाजित करने के लिए मजबूर किया है। ओह, अरबों को अपने अलग किए गए लोगों के खिलाफ आने के लिए यहोवा द्वारा गंभीर रूप से अनुशासित किया गया है और आगे भी किया जाता रहेगा, जैसे कि हम अमेरिकियो (एक राष्ट्र के रूप में) को हाल ही में इस्राएल को मजबूर करने के लिए परमेश्वर द्वारा गंभीर रूप से अनुशासित किया गया है और जारी रहेगा। ताकि उनकी भूमि का कुछ भाग उनके शत्रुओं को सौंप दिया जाए। लेकिन, जबकि नूह के बेटे हाम के

वंशज आम तौर पर उन लोगों की एक पंक्ति हैं जो बंधन में हैं, इसमें उन्होंने उन पर श्राप दिया है/लगाया है, लेकिन शेम के वंशजों के साथ ऐसा नहीं है। अरबों और इब्रानियों के साथ भी (या उस मामले के लिए येपेथ)।

ठीक है मैंने बताया कि सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, हम कह सकते हैं कि इश्माएल के वंशज, केतुरा के वंशजों के साथ मिलकर, आधुनिक अरब लोगों का निर्माण करते हैं, और जैसे हम इस कमरे में शुद्ध नस्ल के नहीं हैं। अर्थात हम सभी के भीतर यूरोपीय या एशियाई स्टॉक का कुछ मिश्रण है। ऐसा ही अरब लोगों के साथ भी है। इश्माएल और कतूरा के ये वंशज बहुत पहले ही एक साथ मिलना शुरू हो गए थे, इसलिए हमें यशायाह अध्याय 60 में मिद्यान, एपा और शेबा का उल्लेख मिलता है जो कतूरा के गोत्र हैं। केदार और नबायोथ के साथ–साथ, जो इश्माएल के पुत्र हैं।

सिर्फ अच्छे सन्दर्भ के लिए। जो बाइबिल अध्ययन में सब कुछ है।. आइए हम सब यशायाह पढ़ें 60:1–7, एक साथ।

यशायाह 60:1–7 पढ़ें

यह अंत समय की भविष्यवाणी है कि क्या हो रहा है और इस्राएल के साथ लगातार क्या हो रहा है, ज्यादातर हमारी आंखों के सामने। यह यहूदियों की अपनी मातृभूमि में वापसी के बारे में है और निःसंदेह इस्राएलियों की उनकी ईश्वर प्रदत्त भूमि पर वापसी एक सतत् प्रक्रिया है जो पिछले कई दशकों से चल रही है।

और, जो हमने अभी पढ़ा उसके अंतिम कुछ पदों में हम नाम देखते हैं। उन 5 गोत्रों में से।अरब गोत्र। मिद्यान, एपा, शेबा, केदार और नबायोत के; जिन नामों को हमने अभी–अभी उत्पत्ति में पढ़ना समाप्त किया है। सरलता के लिए, यहाँ जो कहा जा रहा है वह यह है कि अरब लोग अंततः इस्राएल के मित्र और सेवक बन जाएँगे और उनके लिए धन और समृद्धि लाएंगे। अधिक स्पष्ट रूप से, यह इस्राएल में मसीहा की पूजा करने के लिए आने वाले अरब लोगों के बारे में है। तो, यह आज के लिए नहीं, बल्कि निकट भविष्य में कुछ समय के लिए है और विचार यह है कि अरबों की भीड़ इब्रानी मसीहा के सामने झुक जाएगी।

इसलिए हमें यह बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम यहुशुआ के शिष्य अरब लोगों को कैसे देखते हैं। हाँ, आज, अधिकांश अरब इस्राएल के साथ मुद्दे पर ग़लत पक्ष में हैं। यहाँ तक कि उन्होंने अपने पूर्वज अब्राहम के ईश्वर को त्याग कर एक झूठे ईश्वर, एक गैर–ईश्वर, जिसे अल्लाह कहा जाता है, को अपना लिया है। उन्होंने इस तथ्य के कारण ईसाइयों और यहूदियों का पूर्ण शत्रु बनना चुना है, जिसे आज के समाचार मीडिया और आज के सहिष्णु चाहने वाले चर्चों में बहुत गलत तरीके से रिपोर्ट किया गया है।

लेकिन, जिस किसी ने भी मेरे प्रिय मित्र टैस को बोलते हुए सुना है, वह जानता है, मसीहा में कई अरब विश्वासी हैं, तथाकथित ईसाई अरब। अरब मुसलमान, जो अल्लाह में विश्वास करते हैं, हमारे परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों से अधिक धोखेबाज नहीं हैं जो किसी भी परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं! इसलिए, जबकि हमें इस्राएल के साथ खड़ा होना चाहिए। यह जानते हुए कि यह हमें दुनिया के अधिकांश लोगों के खिलाफ खड़ा कर देगा, क्योंकि यह हमारा कर्तव्य है और ईश्वर के सामने पुकार है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें अरबों या मुसलमानों से नफरत करनी होगी। वे जिस पर विश्वास करते हैं उससे हम नफरत कर सकते हैं, वे जो करते हैं

उससे हम नफरत कर सकते हैं, और जो लोग हमें या इस्राएल को नष्ट करने की कोशिश करते हैं उन्हें नष्ट करने में हम उतना गलत नहीं हैं, जितना हमने द्वितीय विश्व युद्ध में हिटलर की सेनाओं से लड़ने में किया था। लेकिन हमें यकीन है कि इसमें आनंद लेने की ज़रूरत नहीं है, या ऐसा करने में आनंद नहीं लेना है।

अब संभवतः इस्लाम के बारे में कुछ बातें बताने का भी अच्छा समय है; क्योंकि इस्लाम कहता है कि इश्माएल ही इस्लाम का सच्चा संस्थापक है।

मैं इस्लाम और इश्माएल के मामले के सरल इतिहास के बारे में भयानक अज्ञानता और स्पष्ट एजेंडा संचालित झूठ के कारण इसमें बहुत समय बिता रहा हूँ। मैं सीधे तौर पर कहना चाहता हूँ कि इश्माएल इस्लाम का पिता नहीं है। वह सभी अरब लोगों का पिता भी नहीं है, उनमें से केवल कुछ का ही है।

आप देखिए, इसहाक और इश्माएल एक तरफ यहूदियों और ईसाइयों और दूसरी तरफ मुसलमानों के बीच मामले की जड़ का प्रतिनिधित्व करते हैं; इसहाक और इश्माएल सड़क में एक अलग काँटा हैं और कृपया समझें कि यहूदी–ईसाई दुनिया और इस्लामी दुनिया के बीच मतभेद अप्रासंगिक हैं। कोई आधा रास्ता नहीं है, कोई समझौता नहीं है। इस्लाम कहता है कि पवित्र शास्त्र का ईश्वर की ओर से वादा, अल्लाह की ओर से, और अब्राहम के साथ वाचा के वादे के लोग इश्माएल के द्वारा नीचे आया जो और कुरान में दर्ज हैं। निःसंदेह, यहूदियों और ईसाइयों ने यह दर्ज किया है कि यह प्रतिज्ञा इसहाक के माध्यम से आया है, और पवित्रशास्त्र में दर्ज किया गया है।

कई अध्यायों को पढ़ते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रतिज्ञा का पुत्र इसहाक के माध्यम से था, इश्माएल से नहीं। दिलचस्प बात यह है कि मुसलमान बाइबिल से नफरत करते हैं और वे कहते हैं कि बाइबिल के पाठों को यहूदियों और ईसाइयों ने भ्रष्ट कर दिया है। वास्तव में, बाइबिल को कहना चाहिए कि यह इसहाक था जिसे अस्वीकार कर दिया गया था, और इश्माएल वादे का असली बेटा था।

आइए कुछ ऐसे तथ्यों पर नजर डालें जो इस धारणा को पूरी तरह से बकवास बनाते हैं। सबसे पहले, इस्लाम धर्म तब तक अस्तित्व में नहीं आया था जब तक पैगंबर मोहम्मद ने इसका गठन नहीं किया था; मुसलमान इससे पूरी तरह सहमत हैं और ईसा मसीह के समय के लगभग 600 वर्ष बाद तक मोहम्मद का जन्म भी नहीं हुआ था। पुराना नियम की आखिरी किताब मोहम्मद के जन्म से 1000 साल पहले लिखी गई थी। नया नियम की आखिरी किताब मोहम्मद के जन्म से 5 शताब्दी पहले लिखी गई थी। मुझे इसे दूसरे तरीके से कहना चाहिए पुराना नियम, जैसा कि हम जानते हैं, 400 ईसा पूर्व में पूरा हुआ था नया नियम, जैसा कि हम जानते हैं, लगभग 100 ईस्वी में पूरा हुआ था, और इस्लाम धर्म के संस्थापक का जन्म लगभग 575 ईस्वी में हुआ था। और, बाइबिल पढ़ने पर, इस्लाम के संस्थापक मोहम्मद कहते हैंः "ओह, जो कुछ मैं आपको बता रहा हूँ वह सत्य है उसे विकृत करने के लिए यहूदियों ने वह सब भ्रष्ट कर दिया था"। मानो आज किसी ने खड़े होकर कहा हो; अरे, वाशिंगटन डीसी में शीशे के नीचे जो संविधान है, जो 250 साल पहले लिखा गया था, वह सही नहीं है। मैंने अभी सही लिखा है। वाशिंगटन डीसी में मूल खराब हो गया है, और इसे सिर्फ इसलिए खराब कर दिया गया था ताकि आप

विश्वास न करें कि मैंने 2005 में यहीं मेरिट द्वीप पर सही लिखा था। अब, क्या यह आपके लिए सबसे अतार्किक, सबसे मूर्खतापूर्ण बात है?' कभी सुना है? इस्लाम आज पवित्र धर्मग्रंथों के बारे में बिल्कुल यही दावा करता है।

जब मोहम्मद द्वारा इस्लाम का आविष्कार किया गया, तब तक रोमन कैथोलिक कलीसिया पूरे यूरोप और एशिया में प्रमुख था। कॉन्स्टेंटाइन, जिन्होंने ईसाई धर्म के नए गैर–यहूदी रूप को रोमन साम्राज्य का राज्य धर्म घोषित किया था, मोहम्मद के जन्म के समय तक 200 से अधिक वर्षों से पहले ही मर चुके थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मृत सागर स्क्रॉल के साथ हमारे पास ईसा मसीह के जन्म से पहले के इब्रानीयों के सबसे पुराने वास्तविक, मूल शास्त्र लेखन हैं। और उनका अध्ययन किया गया है और उनकी तस्वीरें जारी की गई हैं, और भी बहुत कुछ उनमें से एक को यरूशलेम में सभी के देखने के लिए प्रदर्शित किया गया है। और वे उन बाइबिलों से पूरी तरह सहमत हैं जो आज आपके और मेरे सामने हैं (निश्चित रूप से); यह साबित करते हुए कि कोई भ्रष्टाचार या परिवर्तन नहीं हुआ है।यदि कभी हुआ तो कम से कम 100 ईसा पूर्व के बाद नहीं। फिर भी, इस्लाम कहता है कि उत्पत्ति को जो कहना चाहिए था वह यह है कि इश्माएल चुना गया था, और इसहाक ने अस्वीकृत था।

दूसरा और कभी भी किसी को आपको अन्यथा बताने न दें।.दो ही तरीके हैं और केवल दो ही हैं जिनसे हम जान सकते हैं कि परमेश्वर कौन है। उसका नाम और उसके गुण। कुछ ऐसे विद्वान भी हैं जो कहते हैं कि अल्लाह का शाब्दिक अर्थ "ईश्वर" है। जबकि सबसे सामान्य अर्थ में यह सत्य है, इस्लाम में ईश्वर का एकमात्र नाम अल्लाह है। वे ईश्वर के लिए बाइबिल के सभी नामों को अस्वीकार करते हैं, भले ही वे नाम अरब–आधारित हों। युद–हेह–वाव–हेह. अल शादाई, या ब्रह्मांड के परमेश्वर के लिए कोई अन्य बाइबिल नाम या उपाधि इस्लाम के अनुसार गलत है, इसलिए, इस्लाम के ईश्वर का नाम बाइबिल के ईश्वर से बिल्कुल अलग है।

इसके अलावा, इस्लाम का ईश्वर मृत्यु की महिमा करता है। बाइबिल का ईश्वर जीवन की महिमा करता है। इस्लाम के परमेश्वर कहते हैं कि मुसलमानों को तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन करने वालों को इस्लाम में लाना चाहिए। बाइबिल के परमेश्वर कहते हैं कि उनके विश्वासियों को प्रेम और विश्वास के माध्यम से धर्मान्तरित लोगों पर विजय प्राप्त करनी है। इस्लाम के ईश्वर कहते हैं कि एक मुसलमान का आचरण कैसा होगा, यह उसका शाश्वत भविष्य निर्धारित करता है। बाइबिल के परमेश्वर कहते हैं कि किसी के दिल की स्थिति उसके शाश्वत भविष्य को निर्धारित करती है। इस्लाम के ईश्वर का कोई मसीहा नहीं है। बाइबिल के परमेश्वर कहते हैं कि एक मसीहा अवश्य होगा। इस्लाम का ईश्वर युद्ध का ईश्वर है। बाइबिल का परमेश्वर एक शालोम परमेश्वर है। यह आगे ही आगे और आगे ही आगे चलता ही जाता है। इस्लाम के ईश्वर के गुण, चरित्र और निर्देश, जैसा कि कुरान में पाए जाते हैं, बाइबिल के ईश्वर के गुणों, चरित्र और निर्देशों के बिल्कुल विपरीत हैं और फिर भी, हमारे पास एक राष्ट्रपति और कई ईसाई धार्मिक नेता हैं जो हमें बताते हैं कि ईसाई और मुस्लिम एक ही ईश्वर की पूजा कर रहे हैं। मैंने कई पादरियों को यह कहते सुना है कि किसी मुसलमान से संपर्क करने का सबसे अच्छा तरीका यह कहना है कि हम इस बात का सम्मान करते हैं कि वे ईश्वर की पूजा कर रहे हैं; वे बस यह नहीं जानते कि जिस परमेश्वर की वे पूजा कर रहे हैं वह यीशु है! यीशु! क्या मैं क्रोधित होकर बस एक लिट्टी जैसा लग रहा हूँ? यह पागलपन है। यह निकृष्टतम प्रकार की ईशनिंदा है, और यह परमेश्वर के लोगों को यह विश्वास

करना सिखा रहा है कि किसी भी परमेश्वर की पूजा करना ठीक है। चाहे उसका नाम या विशेषताएँ कुछ भी हों। क्योंकि कोई भी परमेश्वर वास्तव में वह इस्राएल का परमेश्वर है। खैर, यह वह नहीं है जो यहोवा हमें बता रहा है, है ना?

यदि आप जिस भी कलीसिया या आराधनालय में जाते हैं, वहाँ के लोगों से प्यार करते हैं, तो यह जानकारी अपने साथ ले जाएँ और उन्हें सच्चाई बताएँ। क्या तुम्हें एहसास है कि उन इस्राएलियों का क्या हुआ जो यहोवा और अन्य राष्ट्रों के ईश्वरों दोनों की पूजा करते थे? जिन्होंने उस युग के मानकों के अनुसार राजनीतिक रूप से सही और सहिष्णु होने की कोशिश की? वे लोग जिन्होंने घोषणा की कि यहोवा और Baal एक हैं? वे तितर–बितर हो गये और लाखों नष्ट हो गये। उन्होंने जो किया, और जो हम आज करते हैं, उसके बीच कोई अंतर नहीं है, ठीक हमारे पूजा स्थलों में, जब हम घोषणा करते हैं कि यहोवा, मसीहा और अल्लाह एक हैं और मैं आपको याद दिलाता हूँ: परमेश्वर ने उनके साथ व्यक्ति–दर–व्यक्ति या परिवार–दर–परिवार व्यवहार नहीं किया। उसने उन पर एक राष्ट्रीय निर्णय सुनाया, और ठीक वैसी ही बात हमारे समय में भी भविष्यवाणी की गई है; आप व्यक्तिगत रूप से यह नहीं मानते कि यह ईशनिंदा आपको और आपके परिवार को हमारे देश में दूसरों के साथ परमेश्वर के भयानक अनुशासन के तहत पीड़ित होने से छूट नहीं देती है। ओह, निश्चित रूप से, आप बचाए गए हैं, और आपका शाश्वत भविष्य सुरक्षित है। लेकिन, क्या सचमुच यही सब मायने रखता है? मुझे यह ठीक नहीं लगता है। आइए इश्माएल की इन जनजातियों की जाँच करें।

नबायोत इश्माएल का पहलौठा पुत्र था। उनकी जनजाति वे लोग हैं जिन्हें नबैआती कहा जाता है, असीरियन खातों में अरब प्रायद्वीप के लोगों के खिलाफ उनके साम्राज्य की लड़ाई के बारे में बताया गया है, यहूदा को बेबीलोन में बंदी बनाए जाने से कुछ ही दशक पहले। हम इन लोगों को नबातियन के रूप में जानते हैं, और हाल ही में पेट्रा के जॉर्डनियन के रूप में भी जानते हैं।

बाइबिल में उत्पत्ति के कई शताब्दियों बाद केदार के बारे में बात की गई है, और उन्होंने एडोमाइट लोगों (एसाव के वंशज) के साथ किसी प्रकार का संबंध बनाया था। ये वे लोग हैं जो पूरे अरब और सिनाई प्रायद्वीप में चरवाहों और बकरी चराने वालों के रूप में घूमते थे। बिना किसी संदेह के, वे कम से कम आधुनिक बेडौइन का हिस्सा बनते हैं।

असीरियन ऐतिहासिक अभिलेखों को इदीबैल के नाम से जाना जाता है; उन पर टिग्लैथ–पिलेसर ने विजय प्राप्त की थी। वही व्यक्ति जिसने एप्रैम के उत्तरी साम्राज्य इस्राएल को जीतने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी .और मिस्र–असीरियन सीमा की रक्षा के लिए भेजा गया।

दुमा की जनजाति यशायाह 21 में फिर से दिखाई देती है। मिद्यान के ठीक ऊपर एक क्षेत्र पर कब्जा कर लिया अरब प्रायद्वीप पर स्थित अगाबा की खाड़ी।

तेमा जनजाति ददान के उत्तर–पूर्व में एक प्रसिद्ध नखलिस्तान के आसपास रहती थी, क्योंकि यह एक बहुत अच्छी तरह से यात्रा करने वाले कारवां मार्ग पर स्थित था जो अरब के दक्षिणी भाग को जोड़ता था। मेसोपोटामिया की निचली पहुंच वाला प्रायद्वीप।

ऐसा प्रतीत होता है कि जेतुर और नेफ़िश एक ही जनजाति में एकीकृत हो गए हैं, और बाद में बाइबिल में (1 इतिहास 5 में) हाग्राइट्स के रूप में वर्णित किया गया है। हागर–इट्स के लिए एक संकुचन, हाजिरा के वंशज। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, इश्माएल के शेष 12 पुत्रों के बारे में शुद्ध अटकलों के अलावा कुछ भी ज्ञात नहीं है, इसलिए हम वहाँ नहीं जाएँगे।

पद 16 हमें बताता है कि इश्माएल के वंशज गाँवों में रहते थे; दूसरे वचनों में, उन्होंने चारदीवारी वाले शहरों का निर्माण और निवास नहीं किया। वे ग्रामीण थे, किसान और चरवाहे थे और कुछ रेगिस्तान में घूमने वाले और व्यापारी थे। यह अरबों द्वारा विकसित की गई जीवनशैली का वर्णन करता है, क्योंकि वे असुरक्षित शहरों में रहते थे। वे दूसरे से कुछ लेकर अपने लिए लाभ पाने की उम्मीद में लगातार एक–दूसरे पर हमला करते थे। यह मानसिकता आज भी काम कर रही है। इस्लाम जिस बुनियादी चीज़ के ख़िलाफ़ लड़ रहा है, वह जीवन जीने का एक ऐसा तरीका है जो चीजों का उत्पादन करता है, न कि उनके जीवन का पारंपरिक तरीका जो दूसरों द्वारा उत्पादित चीज़ों को ग्रहण करता है। पारंपरिक अरब जनजातीय तरीके अरब जनजातियों के इर्द–गिर्द घूमते थे जो हमेशा अन्य अरब जनजातियों से धन और शक्ति लेने की कोशिश करते थे। यहाँ तक कि इस्लाम के संस्थापक मोहम्मद ने भी अन्य अरब जनजातियों के खिलाफ अपनी जनजाति के हमलों का नेतृत्व करके और जीत हासिल करके एक नेता के रूप में अपनी प्रतिष्ठा हासिल की। लक्ष्य हमेशा एक ही था लूट।

अब, मैं चाहता हूँ कि हम एक मिनट के लिए इसमें रम जाएँ। ऐसा क्यों है कि दुनिया के वे अरब/मुस्लिम गढ़ पूरी दुनिया में सबसे पिछड़े स्थान भी हैं? अफगानिस्तान, पाकिस्तान, अधिकांश इराक और ईरान, इत्यादि। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आम तौर पर लोगों के पास काम करने, उत्पादन करने, निष्पक्षता और तकनीकी प्रगति की कोई अवधारणा नहीं है। जब इस्लाम ने 711 ईस्वी में यूरोप पर हमला किया, तो वे यूरोपीय धन की तलाश में थे, न कि यूरोपीय जीवन शैली या यूरोपीय तकनीक के। वे वह लेना चाहते थे जो यूरोप ने उत्पादित किया था। आज वे बिल्कुल यही चाहते हैं। आतंक के विरुद्ध युद्ध वास्तव में जीवन जीने के तरीके के बारे में एक लड़ाई है, लेकिन, वे जीवन का जो तरीका चाहते हैं वह यह है कि हम इसे पैदा करते हैं और वे इसे अपना लेते हैं क्योंकि वे यह भी नहीं जानते कि कैसे और न ही वे यह जानना चाहते हैं कि कैसे उत्पादन करें और साझा करें।

पद 17 में, हमें बताया गया है कि इश्माएल 137 वर्ष तक जीवित रहा; फिर "उसे उसके रिश्तेदारों के पास इकट्ठा किया गया"। यहाँ भी, हमें इस बात का कोई संदर्भ नहीं मिला कि "उसे उसके रिश्तेदारों के पास इकट्ठा किया गया था" का क्या मतलब है। उसके परिजन कहाँ थे? उसके परिजन कौन थे? क्या यह परवर्ती जीवन था? यदि हाँ, तो इसमें क्या शामिल था? हम तोरह में कभी पता नहीं लगा पाएंगे, और पूरे पुराना नियम में बहुत कम। बल्कि, यह कहने का एक अच्छा तरीका है कि उन्होंने एक अच्छा जीवन जीया, और संभवतः प्राकृतिक कारणों से शांति से मर गए। उनके लोग निस्संदेह उनके पूर्वजों के विपरीत उनके वंशज थे। वह विभाजित हो गया था और अपने पिता से अलग हो गया था, इसलिए वह एक नई लाइन की शुरुआत थी। उनके रिश्तेदारों के साथ एकत्रित होने पर, मुझे निश्चित लगता है, उनका तात्पर्य उनके निकटतम परिवार से है। जिन्हें कई शताब्दियों तक अरब के रूप में नहीं जाना जाएगा।

आगे हमें एक सामान्य क्षेत्रीय सीमा दी गई है जहाँ इश्माएल के वंशज रहते थे और यह एक मिस्र के साथ सिनाई प्रायद्वीप की सीमा पर शुरू होता है। यह शूर का संदर्भ है, जिसका अर्थ है "दीवार", और फिर उत्तर में मेसोपोटामिया के असीरियन तक जाता है। हवीला का स्थान ज्ञात नहीं है, क्योंकि मध्य पूर्व में ऐसे कई स्थान हैं जो इसके अनुसार चलते हैं, या इसके हवीला नाम के भिन्न रूप से लेकिन निष्कर्ष यह है कि इश्माएल के वंशज बीच में ही रहने की प्रवृत्ति रखते थे, क्योंकि यह कहता है कि उन्होंने अपने कुटुम्बियों के साथ डेरे डाले। वे मेसोपोटामिया, या मिस्र, या न्युबियन, या पृथ्वी के कई अन्य गैर–सामी लोगों के साथ घुलते–मिलते नहीं दिखे। सामान्यतया कहा जाए तो इश्माएल के वंशजों ने कनान देश के उत्तर, दक्षिण और पूर्व के क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया ठीक है। अब जब आप इश्माएल के बारे में अपनी अपेक्षा से अधिक जानते हैं, या कभी जानना चाहते हैं, तो आइए उत्पत्ति 25 में थोड़ा और आगे बढ़ें।

उत्पत्ति 25:19–34 पढ़ें

अध्याय 25 को कमोबेश 3 भागों में विभाजित किया गया है: पहला तीन भागों का पहला भाग अब्राहम के जीवन के अंतिम मतहत्वपूर्ण विवरणों से बना है, दूसरा भाग जिसमें इश्माएल के वंशजों का उल्लेख शामिल है, और वे कहाँ बसे, इसके बारे में कुछ जानकारी देते हुए, यहाँ अध्याय 25 के अंतिम तीसरे में, हम इसहाक की कहानी के अंत और उसके बेटे याकूब की शुरुआत का चार्ट बनाना शुरू करते हैं मशाल को फिर से पारित करने के लिए तैयार किया जा रहा था।

इसहाक के बारे में उसके बेटे याकूब और उसके पिता अब्राहम की तुलना में बहुत कम ही बात की जाती है। उदाहरण के लिए, हमें अध्याय 24 के अंत में बताया गया है कि इसहाक ने रेबेका से शादी की, लेकिन उनकी शादी के पहले 20 वर्षों के बारे में हमें कोई जानकारी नहीं दी गई है। हम जानते हैं कि अब्राहम के विपरीत, इसहाक घर के करीब रहता है। इसहाक के बारे में ज्ञात कहानियाँ बेर्शेबा के इर्द–गिर्द केंद्रित हैं; जहाँ तक कोई जानता है, अपने जीवन के अंतिम समय को छोड़कर, वह अपने पिता की तरह हेब्रोन में नहीं रहता था। लेकिन, अपने पिता की तरह, वह भेड़–बकरियों और गाय–बैलों का मालिक था।

पद 21 में, हम पाते हैं कि, बिल्कुल उसी तरह जैसे यह उसके पिता के लिए था; इसहाक अपनी प्यारी पत्नी के साथ काफी समय तक रहा, लेकिन उसके लिए कोई वारिस पैदा नहीं हो सका। इसके अलावा, यह कहने का मतलब है कि वह बंजर थी, इसका मतलब था कि उसने इसहाक को कोई संतान नहीं दी। यहाँ तक कि लड़कियाँ भी नहीं और अब्राहम की तरह, इसहाक यहोवा के सामने जाता है, और यहोवा एक बेटे के लिए उसके अनुरोध को स्वीकार करता है। रेबेका अब गर्भवती है। बेशक, अब्राहम और सारा की गर्भधारण की स्थिति और इसहाक और रेबेका के साथ वर्तमान समस्या के बीच बड़ी समानताएं हैं, लेकिन बहुत अंतर भी हैं। उदाहरण के लिए, न तो इसहाक और न ही रेबेका बुजुर्ग थे या बच्चे पैदा करने की उम्र से अधिक थे। इससे भी अधिक, हम इसहाक को किसी रखैल या रेबेका के साथ नहीं पाते हैं जो उसके स्थान पर एक बच्चे को जन्म देने के लिए एक दासी या दासी की पेशकश करती है। ऐसा

प्रतीत होता है कि जब तक यहोवा कुछ करने का निर्णय नहीं लेता, तब तक स्थिति के साथ जीने के अलावा कुछ भी करने की कोई योजना नहीं है।

क्या ऐसा है कि प्रभु ने इसहाक को बच्चे पैदा करने की अनुमति देने से पहले उसके पास आने का इंतजार किया? क्या ऐसा है कि प्रभु को इसहाक ने विवश किया था, क्योंकि इसहाक की प्रार्थनाएँ आवश्यक थीं ताकि ईश्वर रेबेका को उपजाऊ बनने की अनुमति दे सके? यह आध्यात्मिक अगुवों के बीच कई तर्कों का सार हैः क्या परमेश्वर को कार्य करने के लिए हमारी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है?

मुझे नहीं लगता. लेकिन, परमेश्वर हमें सिखाना चाहते हैं और, वो हमसे रिश्ता भी चाहता है; अभी तक। संचार के बिना किसी के साथ क्या रिश्ता संभव है? जबकि मौखिक भाषण है संचार का विशिष्ट मानव–से–मानव तरीका, प्रार्थना वह तरीका है जिसे परमेश्वर ने मानव–से–परमेश्वर संचार के लिए निर्धारित किया है और, जबकि ईश्वर को प्रार्थना की आवश्यकता नहीं है, वह प्रार्थना चाहता है। इसके विपरीत, हमें मनुष्य के रूप में प्रार्थना करने की आवश्यकता है। मैं ऐसे किसी तरीके के बारे में नहीं सोच सकता जो अपनी या दूसरे की ज़रूरतों को ईश्वर तक पहुँचाने और फिर उसकी प्रतिक्रिया पर आश्चर्यचकित होने से अधिक मजबूत विश्वास बनाता हो।

लेकिन रेबेका की गर्भावस्था के लिए इतनी चाहत लगभग तुरंत ही उसके लिए असहज हो गई। और, उसके गर्भ में इन स्पष्ट रूप से बहुत सक्रिय जुड़वाँ बेटों ने उसे परमेश्वर से पूछताछ करने के लिए प्रेरित किया कि क्या हो रहा था। आइए स्पष्ट करें इस गर्भावस्था ने रेबेका को चिंतित कर दिया। उसके गर्भ के भीतर गतिविधि सामान्य नहीं थी। यहाँ तक कि चल रही घटनाओं का वर्णन करने के लिए एक असामान्य इब्रानी वचन भी चुना जाता है। इस वचन का आमतौर पर संघर्ष के रूप में अनुवाद किया जाता हैः और वह वचन वा–यिट्रोत्शेतसु है। यह क्रिया कुचलने, और जोर से मारने, और तोड़–फोड़ करने के भाव से अधिक है। कुछ बहुत हिंसक।